◆ भारतीय संस्कृति ◆

सृष्टि के प्रमुख तत्त्व क्या हैं?

डॉ. शिवकुमार ओझा

Scanned by CamScanner

विषय सूची

क्रमांक		विषय	पृष्ठ संख्या
		प्राक्कथन..........................	9
1.		अध्याय – 1 विषय प्रवेश......................	13
2.		अध्याय – 2 प्रकृति.........................	17
	2.1	"प्रकृति" पद की व्याख्या..............	17
	2.2	महत्तत्व – प्रकृति का प्रथम विषम–परिणाम................................	19
	2.3	अहंकार – प्रकृति का द्वितीय विषम–परिणाम................................	20
	2.4	प्रकृति के पदार्थों का गण (समूह).......	24
	2.5	प्रकृति के पदार्थों के अस्तित्व में प्रमाण..	25
	2.6	प्रकृतियाँ और विकृतियाँ................	26
	2.7	प्रकृति के तीन गुण – सत्त्व, रज, तम..	27
	2.8	"गुण" नाम क्यों?.....................	31
	2.9	प्रकृति के तीन गुणों में परस्पर सम्बन्ध..	31
	2.10	प्रकृति के गुण ही गुण में बरत रहे.....	33
	2.11	प्रकृति और क्षेत्र.........................	38
	2.12	प्रकृति के तीनों गुण बन्धनकारक........	38
	2.13	प्रकृति में कारण–कार्य नियम............	38
	2.14	प्रकृति का प्रयोजन – भोगापवर्ग.........	40
	2.15	प्रकृति में प्रवृत्ति का कारण.............	41
	2.16	प्रकृति के साथ भारतीय संस्कृति का बन्धुत्व................................	43
3.		अध्याय – 3 ब्रह्म (परमात्मा)	47
	3.1	"ब्रह्म" पद का अर्थ....................	47
	3.2	"लक्षण" पद की व्याख्या................	48

Scanned by CamScanner

	3.3	ब्रह्म का स्वरूप लक्षण - सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द)........	50
	3.4	ब्रह्म का तटस्थ लक्षण........	56
	3.5	पुरुष (ब्रह्म) का तीन अर्थों में प्रयोग....	57
	3.6	ब्रह्म के विधेयमुख (सकारात्मक) नाम....	61
	3.7	ब्रह्म के निषेधमुख (नकारात्मक) नाम....	65
	3.8	परमात्मा के मुख्य नाम........	66
	3.9	परमात्मा के अस्तित्त्व में प्रमाण.........	68
	3.10	दृष्टांतों द्वारा ब्रह्म का निरूपण..........	69
	3.11	ब्रह्म के औपचारिक एवं आलंकारिक वर्णन	71
	3.12	ब्रह्म की भिन्न-भिन्न त्रयी........	72
	3.13	ब्रह्म के दो रूपों (जड़ और चेतन) के पर्यायवाची........	73
	3.14	परमात्मा की सोलह कलाएँ........	74
	3.15	भगवान् की विभूतियाँ........	74
	3.16	भगवान् के अवतार........	77
	3.17	ब्रह्म का साक्षात्कार........	81
	3.18	ब्रह्म का माया रूप........	87
	3.19	ब्रह्मरूप (ब्रह्मव्यंजक) स्वर........	92
	3.20	ब्रह्म में यह बातें नहीं........	92
4.	**अध्याय - 4 जीव (जीवात्मा)........**		**93**
	4.1	जीव के तीन अंग........	93
	4.2	आत्मा (शुद्ध-चेतन) का विवेचन........	94
	4.3	अन्तःकरण अथवा सूक्ष्म-शरीर का विवेचन........	109
	4.4	"चिदाभास" का विवेचन........	109
	4.5	जीव तथा आत्मा (परमात्मा) को रूपक द्वारा समझना........	115
	4.6	"मैं" के तीन अर्थ........	115
	4.7	जीव (जीवात्मा) के लक्षण........	116
	4.8	ईश्वरकृत-सृष्टि और जीवकृत-सृष्टि.....	119

Scanned by CamScanner

	4.9	जीव की गतियाँ........................	121
	4.10	"जीव" शब्द के अर्थ समझाने हेतु एक दृष्टांत........................	122
5.	**अध्याय - 5 मोक्ष (परमपुरूषार्थ)**		**124**
	5.1	सभी कर्मों की सिद्धि में बन्धन, तत्त्वज्ञान और मुक्ति........................	124
	5.2	मोक्ष (मुक्ति) किसे कहते?...............	125
	5.3	मोक्ष का स्वरूप........................	127
	5.4	संभावित स्थितियाँ जिन्हें मोक्ष नहीं समझना चाहिए........................	129
	5.5	यह पाँच विकार जिसमें हैं, वह मोक्ष नहीं	129
	5.6	लौकिक उपायों से दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति सम्भव नहीं........................	130
	5.7	मोक्ष के पर्यायवाची........................	131
	5.8	मुक्ति की सात अवस्थाएँ...............	132
	5.9	मुक्ति के दो भेद - क्रममुक्ति और सद्योमुक्ति........................	134
	5.10	जीवन्मुक्त और विदेहमुक्त...............	134
	5.11	मोक्ष प्राप्त पुरुष की संज्ञाएँ (उपाधियाँ)..	135
6.	**अध्याय - 6 योग**........................		**137**
	6.1	"योग" का अर्थ........................	137
	6.2	"योग" की अन्य व्याख्याएँ...............	139
	6.3	योग का बीजरूप प्रारम्भ...............	140
	6.4	योग का महत्व........................	141
	6.5	योगमार्ग के पथिक के चार स्तर और सात स्तर........................	143
	6.6	योग भ्रष्ट........................	145
	6.7	योग का फल........................	146
7.	**अध्याय - 7 काल (समय)**........................		**147**
	7.1	"काल" का अर्थ........................	147
	7.2	काल के लिंग........................	147

Scanned by CamScanner

	7.3	अहोरात्र (दिन-रात) के विभाग..........	147
	7.4	सप्ताह, पक्ष और मास..................	149
	7.5	वर्ष, ऋतु और अयन..................	149
	7.6	सत्ययुग...........................	150
	7.7	त्रेतायुग...........................	152
	7.8	द्वापरयुग..........................	154
	7.9	कलियुग..........................	155
	7.10	चतुर्युग (महायुग).....................	157
	7.11	मन्वन्तर..........................	158
	7.12	कल्प............................	159
	7.13	वर्तमान कल्प, मनवंतर, युग और वर्ष...	160
8.	**अध्याय - 8 प्रमुख तत्त्वों का परस्पर सम्बन्ध..**		**162**
	8.1	सृष्टि संचालन हेतु परस्पर सम्बन्ध......	162
	8.2	मानव को उच्चतम शिखर पर पहुँचाने हेतु परस्पर सम्बन्ध..................	162
9.	**अध्याय - 9 भारतीय संकृति 'सनातन" क्यों?..**		**164**
	9.1	आधार शाश्वत होने के कारण..........	164
	9.2	स्वरूप को अभिव्यक्त करने के कारण..	164
	9.3	प्रमाणों पर आधारित होने से..........	164
	9.4	सनातन का धर्म होने से...............	165
	9.5	सनातनरूप से रहने वाला..............	165
	9.6	अपने अनुयायियों को सनातन बनाता...	165
	9.7	सनातन को प्राप्त कराता...............	166

****

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

सृष्टि के मुख्य तत्त्वों से हमारा आशय उन मौलिक पदार्थों से है जो अनादि हैं, सृष्टि के संचालन एवं मनुष्य की प्रगति हेतु मुख्य भूमिका निभाते हैं, अनिवार्य हैं। ये मौलिक पदार्थ हैं- प्रकृति, ब्रह्म, जीव, मोक्ष, योग, और काल। ये पदार्थ शाश्वत रूप से सृष्टि में विद्यमान हैं तथा भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। भारतीय संस्कृति समझने के लिये इन पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। इन पदार्थों का यथार्थ ज्ञान न होने पर भारतीय संस्कृति समझना कठिन होगा, विभिन्न प्रकार की शंकाएँ उत्पन्न करेगा। प्रस्तुत पुस्तक में इन पदार्थों की कुछ विस्तृत चर्चा कर इनके स्वरूपों को समझने की चेष्टा की गयी है। "भारतीय संस्कृति" शब्द से हमारा तात्पर्य वैदिक संस्कृति, सनातन धर्म तथा हिन्दू धर्म से है।

भारतीय संस्कृति में ऐसे तत्वों (पदार्थों) की विद्यमानता है जो भारतीय पुरातन विचारधारा के अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाती है और जो भारतीय संस्कृति को अनादि काल से जीवित रखे हुए हैं जिसने भारतीय संस्कृति को सनातन बनाया है। इन तत्वों के नाम हैं- प्रकृति, ब्रह्म, जीव, मोक्ष, योग, और काल। सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति इन्हीं मुख्य तत्वों से ओत-प्रोत है। इन सभी तत्वों के विषय में भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत बृहद् विवेचन हुआ है। भारतीय संस्कृति में **प्रकृति** का अर्थ गूढ़ है और उसका विस्तार अत्यंत विस्तृत है जो अव्यक्त से प्रारम्भ होकर विभिन्न सूक्ष्म परिणामों में आती हुई अन्त में स्थूलतम पदार्थों (पृथिवी, जल, वायु, पेड़-पौधे आदि) को प्राप्त होती है, इन्हीं स्थूलतम पदार्थों को पाश्चात्य जगत नेचर (Nature) कहता है जो "प्रकृति" का केवल एक अंश है । भारतीय संस्कृति में **ब्रह्म** शब्द का अर्थ भी बहुत गूढ़ एवं विस्तृत है जिसके अन्तर्गत ब्रह्माण्ड (विश्व) के सभी दृष्ट एवं अदृष्ट (अतीन्द्रिय) पदार्थ आते हैं। भारतीय संस्कृति में **जीव** (Living being) कोई स्थूल पदार्थ नहीं है बल्कि समस्त स्थूल शरीर में व्याप्त सूक्ष्म पदार्थ है जिसका बोध

Scanned by CamScanner

इन्द्रियों द्वारा नहीं होता। भारतीय संस्कृति का परम लक्ष्य बारम्बार आने-जाने वाला सुख नहीं है बल्कि शाश्वत अखण्ड आनंद की प्राप्ति है जिसे **मोक्ष** की संज्ञा दी गयी है। जीव अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तिमान है, उसे दिव्य बनाने का साधन **योग** है। विश्व के सभी स्थानों में तथा सभी क्रिया-कलापों में **काल** सदा विद्यमान रहता है तथा सभी काल के मुख में चले जाते हैं, इसलिये उसे भी प्रत्येक कार्य का कारण माना गया है । इन सभी तत्वों (प्रकृति, ब्रह्म, जीव, मोक्ष, योग और काल) के विषय में भारतीय ऋषियों का सूक्ष्म एवं बृहद् ज्ञान भारतीय संस्कृति को आलोकित करता है, सनातन बनाता है। इन तत्वों का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ हम यह भी स्पष्ट करना चाहेंगे कि सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का चिंतन, दृष्टिकोण व आधार इस पुस्तक में प्रस्तुत शाश्वत तत्व हैं जिनका अनुसंधान मनुष्य को ''अंधकार'' से ''प्रकाश'' की ओर ले जाने के लिये किया गया है। भारतीय संस्कृति किसी व्यक्ति-विशेष, समाज या देश-विशेष की चर्चा नहीं करती। इसलिये भारतीय संस्कृति में पोषित मनुष्य के अन्तःकरण में साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, या अन्य देश पर आक्रमण करने जैसी प्रवृत्तियाँ क्षीण होती हुई दिखलायी देती हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

आधुनिक समय में प्रायः अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने के कारण विचारों की प्रखरता व पवित्रता न्यून हो जाती है, संकुचित (संकीर्ण) होकर रहती है। अंग्रेजी शब्दों के अर्थ संकीर्ण होने के कारण, उसके अन्तर्गत अभिव्यक्त किये गये विचारों में प्रखरता, उदारता व विशालता का अभाव होता है। इस संकुचित अर्थों वाली अंग्रेजी भाषा के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्तकर जीवन-यापन करने के दुष्परिणाम आधुनिक काल में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। अंग्रेजी माध्यम से पढ़े लिखे नवयुवकों ने शायद ही कभी इन मुख्य तत्त्वों के अर्थों को इतनी गूढ़ता एवं विशालता से जाना होगा जिसका वर्णन प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

Scanned by CamScanner

सृष्टि के मुख्य तत्त्व शाश्वत हैं, सनातन हैं। इन तत्वों को आधार बनाकर भारतीय संस्कृति मे मानव-जीवन के उद्देश्यों (पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) तथा उनकी प्राप्ति के लिये उपाय रूप में सामाजिक विधि-विधान, कर्त्तव्य-कर्मों आदि की संरचना की गयी है। इसलिये भारतीय संस्कृति सनातन हुई। भारतीय संस्कृति के सनातन होने के विभिन्न कारणों की चर्चा प्रस्तुत पुस्तक के अन्तिम अध्याय में की गयी है।

हम उन सभी ऋषियों, आचार्यों एवं विद्वानों के आभारी है जिन्होंने भारतीय संस्कृति में प्रयुक्त विभिन्न पदार्थों के ज्ञान से हमारे अज्ञान को मिटाने का प्रयत्न किया, भारतीय संस्कृति को आलोकित किया तथा उसे विलक्षण बनाया। प्रस्तुत पुस्तक में किन्हीं-किन्हीं स्थलों पर सम्बन्धित प्रामाणिक भास्त्रों व आचार्यों के नामों का उल्लेख भी किया गया है, किन्तु सभी स्थलों पर ऐसा नहीं हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक में सृष्टि के मुख्य तत्वों का पृथक्-पृथक् अध्यायों में वर्णन है। पुस्तक के अन्तिम भाग में इन तत्वों का परस्पर सम्बन्ध दर्शाया गया है। यहाँ हम यह भी स्पष्ट करेंगे कि प्रस्तुत पुस्तक हमारी एक बृहद् पुस्तक (जिसका शीर्षक है- "भारतीय संस्कृति महान् एवं विलक्षण") का एक अति लघु एवं संशोधित अंश के रूप में है। विषय के महत्व को देखकर तथा पुस्तक के मूल्य को न्यूनतम रखने के कारण प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। यह द्वितीय संस्करण है जहाँ प्रथम संस्करण की त्रुटियों को सुधार लिया गया है तथा प्रकाशक एवं मुद्रक भी भिन्न हैं। लेखक ने स्वयं प्रकाशक का कार्य ग्रहण किया है , अतः प्रस्तुत पुस्तक इस प्रकाशन का प्रथम संस्करण है। पुस्तक के अन्त में आवरण पृष्ठ पर जिन सभी हमारी भारत में छपी पुस्तकों का उल्लेख है उन सभी के अब नवीन संस्करण के प्रकाशक स्वयं लेखक हैं तथा मुद्रक "त्रिकोण बुक्स" हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय संस्कृति के ऋषियों एवं मुनियों की दिव्य दृष्टि का बोध कराती है। विभिन्न पदार्थों के विषय में ऐसा विशाल

Scanned by CamScanner

दृष्टिकोण, अद्भुत विश्लेषण तथा विलक्षण विचार क्या विश्व की किसी अन्य संस्कृति द्वारा अभिव्यक्त किये गए हैं? इस प्रश्न का उत्तर हम पाठकों से ही प्राप्त करना चाहेंगे। आशा है प्रस्तुत पुस्तक पाठकों के लिये उपादेय होगी। शेष हरि इच्छा।

– शिवकुमार ओझा

****

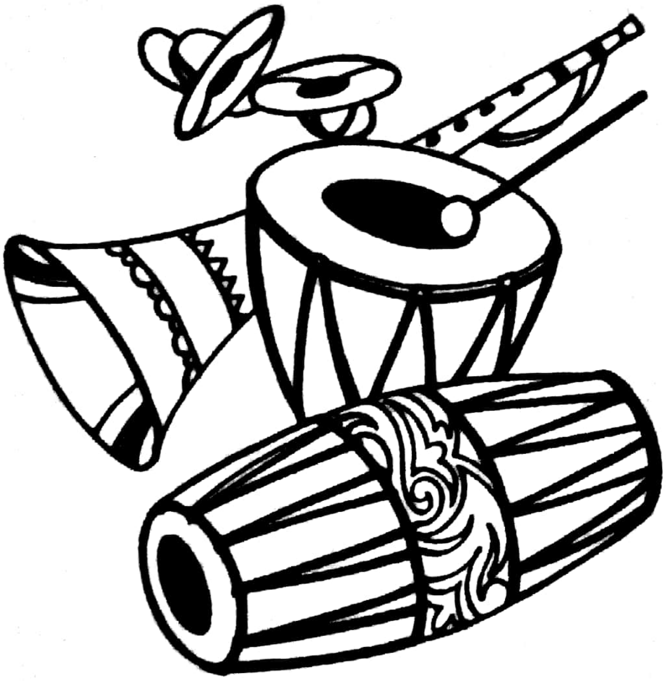

Scanned by CamScanner